राधा स्वामी दयाल की
दया राधा स्वामी सहाय ।

आनन्द रसायन ॥

—:-:O:-:—

जिसको

डाक्टर द्वारकानाथ ने

बनाया

सन् १८९५
मुलतानमल प्रिन्टिंग प्रेस छावनी
नीमच में प्रकाशित कराया ॥

प्रथम वार २५०० मूल्य १)

राधा स्वामी दयाल की दया

राधा स्वामी सहाय।

आनन्द रसायन।

प्यारे सद्गुरु दयाल के चरण कमलों में साष्टांग दण्डवत् और प्रणाम है। ज़बान की सामर्थ्य और क़लम की ताक़त नहीं कि उन चरणों की तारीफ़ कर सकें। जिन की कृपा से तुच्छ मनुष्य वह पदवी हासिल करता है कि जिसे देख कर देवता भी डाह करते हैं। ऐसे सद्गुरु जो मनुष्य देह में साक्षात् परम पुरुष का रूप हैं

अङ्गों में अत्यन्त कमज़ोरी आजाती है आदमी बे हिम्मत होजाता है और दिल परेशान रहता है कोई काम उस-से साबित क़दमी से नहीं हो सकता और ज़िन्दगी का मज़ा बिलकुल जाता रहता है बहुत से रोगों की तकलीफ़ सिर्फ़ इन्हीं की ज़िन्दगी पर ख़तम नहीं होती बल्कि उन की बेगुनाह औलाद भी उन्हीं रोगों में मुबतिला रहती हैं और अपने माता पिता को दुआयें दिया करती हैं और ऐसे मनु-ष्य ऊपर लिखे हुये रोगों में पड़कर अत्यन्त आलसी, निर्बल अक्सर नपुं-सक हो जाते हैं और अपने प्यारे

दुनियां के साथी यानी अपनी स्त्री की कुल दुनियां की उम्मैदें, खुशियां और आराम जो उनके ज़िम्मे फ़र्ज़ हैं बरबाद कर देते हैं, जिन के कारण अत्यन्त लज्जा और नदामत (संताप) उठाते हैं और कभी २ अपनी जान भी खोदेते हैं, शुरू जवानी में यह आम क़ायदा है कि चहरे पर रौनक़ हाथ पैरों में ताक़त दिलपर खुशी इस क़दर मालूम होती है कि अगर अरोग्यता की मूरत कहा जाय तो मुनासिब है लेकिन बड़े ही अफ़सोस की बात है कि शुरू जवानी में आज कल के नौजवान पुष्टाई की औषधि

ढूंढते फिरते हैं और अपने को असाध्य रोगों में डालते हैं कि जिन के चहरों पर धिक्कार बल्कि एक तरह की फटकार बरस्ती है, मानो उन के कुकर्मों की छाप उनके ललाट पर अंकित है।

ऐसी हालत ज़माने की देख कर ग्रन्थकर्त्ता ने यह पुस्तक इस ग़रज़ से बनाई है कि आज कल के नौजवान और आगे की सन्तान इससे ख़ातिर-ख़्वाह लाभ उठावें और भयानक रोगों से बचें और गृहस्थाश्रम के धर्म्मों को बड़ी आसानी और खुशी से पालन कर सकें।

इस पुस्तक में चार भाग हैं इन में नीचे कहे हुये विषय लिखे हैं:—

पहिला भाग।

इस में तीन प्रकरण हैं—

(१) प्रकरण में रोगों के मुख्य कारणों का जो पानी से होते हैं और वायु की स्वच्छता पर ध्यान न रखने से होते हैं वर्णन है—

(२) प्रकरण में व्यायाम (कसरत) का वर्णन है—

(३) प्रकरण में स्नान के गुणों का वर्णन है—

दूसरा भाग ।

इस में छः प्रकरण हैं—

(१) प्रकरण में माता पिता के कर्त्तव्य व बुरी संतान का वर्णन है—

(२) प्रकरण में बुरी संगति का खोटा फल अर्थात् पुरुषमैथुन, हस्तमैथुन का वर्णन है—

(३) प्रकरण में बुरी संगति का दूसरा बुरा फल परस्त्री व वेश्यागमन इत्यादि का वर्णन है—

(४) प्रकरण में परस्त्रीगमन के बुरे फल गरमी, सूज़ाक, स्त्री पुरुष की आपस

की नाइत्तिफ़ाक़ी और उसका सन्तान पर बुरा असर इन का वर्णन है—

(५) प्रकरण में नशे की चीजों के बुरे असर का वर्णन है—

(६) आसनों की तसवीरों या कि ऐसी ही ख़राब किताबों के पढ़नेका बयानहै।

तीसरा भाग।

इस में चार प्रकरण हैं—

(१) प्रकरण में विवाह का वर्णन है—

(२) प्रकरण में उत्तम संतान क्योंकर पैदा हो सक्ती है और मैथुन की रीति का वर्णन है—

(३) प्रकरण में गर्भरक्षा का वर्णन है—

(४) प्रकरण में किस प्रकार पुत्र और किस भांति कन्या उत्पन्न हो इसका वर्णन है—

चौथा भाग ।

इसमें चार प्रकरण हैं—

(१) प्रकरण में नुसखे वास्ते दूर करने प्रमेह (जिरियान) सब सुस्ती शरीर के हिस्सों की कमज़ोरी जो हस्तमैथुन, पुरुषमैथुन, अतिमैथुन, ज्यादह मेह-नत या रंज इत्यादि के कारण से हो—

(२) प्रकरण में सुज़ाक के नुसखे का बयान है—

(३) प्रकरण में गरमी के नुसखे—

(४) प्रकरण में थोड़े से फ़ाइदेमंद लेख हैं—

पहिला भाग।

(१) प्रकरण अनेक रोगो के ख़ास कारण वायु और जल की स्वच्छता स्नान और कसरत के अभ्यास का आदमी को बड़ाभारी ख़याल होना चाहिये क्योंकि फ़ी सैकड़ा ८० बीमारियां इन्ही बातों के ख़याल न रखने से पैदा होतीहैं।

वायु की स्वच्छता ।

वायु में तीन प्रकार की मलीनता होती है । (१) वनस्पति औरजन्तुओं का बीज (माद्दा) वनस्पति तथा छोटे२ जीवों का उस में होना । (२) विषैले और बदबूदार बुख़ारात का होना ।(३) खा़क का होना जिस में असंख्य छोटे२ रेत के परमाणु बाल रुई या तिनके आदि के छोटे टुकड़े मिले होते हैं ।

बड़े २ लायक़ हकीमों के तजरुबों से जोकि ख़ुर्दबीनके ज़रिये से किये गये हैं, यह साबित हुआ है कि यह छोटे २ जीव

शकल १

हवा के वनस्पति और जीव-
धारी जीवों के बीज की सूरत
जैसी ख़ुर्दबीन से दीखती है

और वनस्पतियां आदमी के जीव के वड़े भारी दुश्मन हैं । जब हम सांस लेतेहैं तब ये जीव थोड़े बहुत शरीर के भीतर जाते हैं (देखो चित्र नं० १) इन्हीं जीवों के वायु में होने से डबल रोटी का ख़मीर उठता है और कई प्रकार की वस्तुएं सड़ती हैं ।

इन जीवों की उत्पत्ति और वृद्धि गरमी और तरी से होती है । सरदी के दिनों में ये जीव बिलकुल शिथिल हो जातेहैं और जब गरमी आतीहै तो उन में चेतन्नता आ जाती है बहुत सरदी सह सकते हैं अर्थात् जो बरफ़ में भी रक्खे जावें तोभी जीते रह सकते हैं और

ऐसाभी जाना गया है कि अत्यन्त गरमी भी सह सकते हैं, अर्थात् कुछ काल तक उबलते हुये पानी में भी जीते रह सकते हैं।

जिस स्थान में चीजें सड़ती और गलती रहती हैं वहां की हवा इन जीवों से भरजाती है, जिस के कारण भांति २ के रोग उत्पन्न होते हैं, यदि एक पशु वा पक्षी की सड़ी हुई लाशका टुकड़ा खुर्दबीन से देखा जावे तो मालूम होगा कि उस में से असंख्य छोटे २ जीव वायु में जा रहे हैं, इसी भांति जो एक फफूंदीदार डबल रोटी का टुकड़ा खुर्दबीन के नीचे रक्खा जावे तो मालूम होगा कि- अनन्त

वनस्पति देहधारियों के झुंड के झुंड उस टुकड़े से निकल रहे हैं, जब कि मनुष्य नीरोग और बलवान् रहता है और उसके रगों और पट्ठो में पूरी २ शक्ति रहती है तो इन जीवों का असर नहीं होता और जब शक्ति घट जाती है अथवा अचानक ये जीव शरीर में ज्यादा जा पहुंचते हैं वा एक प्रकार के मुख्य जीव जिनमें अधिक शक्ति होवे भीतर चले जावें तो हम इन जीवों के शिकार बन जाते हैं और नानाभांति के भयानक रोगों में फँस जाते हैं इन्ही जीवधारियों से विषमज्वर, हैज़ा, गुजराती रोग और अनेक प्रकारके भयानक ज्वर आदि रोग

उत्पन्न होजाते हैं (देखो चित्र नंबर २) तथा फोड़ा फुंसी और दांतों का गिर-जाना भी इन्हीं जीवों के कारण से होता है।

दोसौ बरस के लग भग हुए कि एक अत्यन्त प्रबल ज्वर मरी के समान जरमनी में फैलाथा जिससे हजारों मनुष्य रोगी हुए जिस का कारण एक आदमी की लाश जानी गई जो इस तरह के ज्वरसे मराथा और जिस के सड़े हुए शरीर (बदन) से इसी रोग को उत्पन्न करने वाले हज़ारों जीव वायु (हवा) में फैलतेथे जब उस लाश का ठीक प्रबन्ध करादिय गया तो वह रोग भी शान्ति हो गया।

शकल २

यह सूरतें उन छोटे २ जन्तुओं की हैं जो खराब हवा व गन्दे पानी में बहुधा पाये जाते हैं जिनसे नाना प्रकार के रोग होते हैं
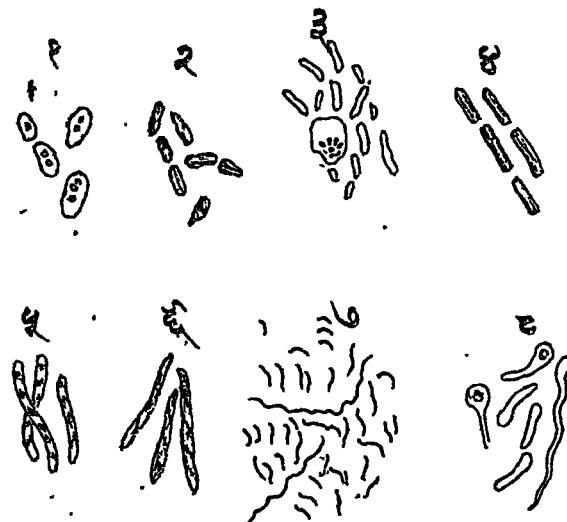
शकल २
११
१०
९
१३
१२
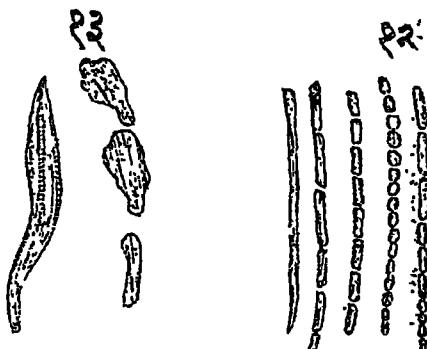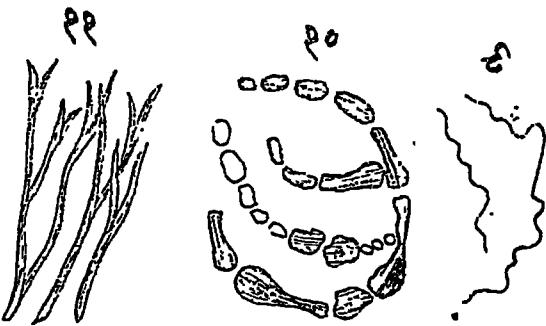
बहुधा बालकों के नखों के मैलकी परीक्षा की गई तो उस में अनेक प्रकार के जीवों के अण्डे पाये गये जो कि भोजन के समय पेटमें जातेथे लोग बहुधा विषमज्वर, हैज़ा, मोतीज्वरादि के रोगियों के मलमूत्र ष्ठीवन (थूक) आदि का यत्न भली भांति नहीं करते इसी से और लोग भी उन्हीं रोगों में फँसते हैं चाहिये कि ऐसी मलीन वस्तुओं का प्रबन्ध उस अर्क़से जो पृष्ठ(   )पर लिखा-है करैं।

२ विषैली और दुर्गन्धित बुखारात से भी जो मोरियों, पाखानों, मनुष्य वा अन्य जीवों के पसेव (पसीने) मूत्र और

विष्ठा से निकलती हैं बहुत बुरा असर पैदा होता है ।

३ साँस लेने के समय ख़ाक के भीतर जाने के कारणभी बहुत हानि होती है यद्यपि ख़ाक (धूल) का मुख में न जाना नामुमकिन है तो भी जिस स्थान में अधिक परमाणुओं का स्वांस के साथ भीतर जानेका डर हो तो उसका उपाय करना उचित है जब कि धूलके अत्यन्त सूक्ष्म परमाणु शरीरके भीतर जाते हैं तो उनका फेफड़ों पर कुछ असर नहीं होता किन्तु उन परमाणुओं के अधिक होने से फेफड़े के छोटे२ हवा के छेद उन परमाणुओं से भरजाते हैं और फिर यही

परमाणु फेफड़ेके अनेक रोगों के कारण होते हैं।

बहुधा संगतराश, कोयले की खानों में काम करने वाले, रुई धुनने वाले और कपड़ा बुन्ने के कारखानों में काम करने वाले सिल (फिफड़ेका रोग जिसमें मनुष्य ख़ून थूकता है) के रोगोंमें बीमार होते हैं मरने के पीछे जो उनके फेफड़े देखे गये तो उन में रेत के छोटे २ परमाणु पाये गये इसलिये ऐसे पेशे वालों को इस बात का बड़ा बचाव चाहिये और काम के समय नाक पर कपड़ा लगा लेना चाहिये जिससे ख़ाक के बड़े २ परमाणु भीतर न जा सकें इससे भी बहुत कुछ

वचाव होजायगा। मकानोंके नीचे छोटे छोटे तहख़ानों का बनाना जहां प्रकाश और वायु भलीभांति न जा सके बड़ाभारी कारण हवाके बिगाड़ने का होता है इसी प्रकार मकानों में सील के पहुंचने के कारण बहुधा काई जमजाती है इस से भी हवा ख़राब हो जाती है।

लोग इस बात का बहुधा (अक्सर) विचार नहीं करते कि इससे क्या हानि होगी परन्तु एक भी काईका छोटा छत्ता अगर ख़ुर्दबीन से देखा जावे तो मालूम होगा कि लाखों (अंकुरों) पौदों का जंगल है और जिससे असंख्य छोटी२ वनस्पतियां हवा में फैलकर अनेक रोग

पैदा करती हैं खाने पीने की वस्तुओं के गलने सड़ने से भी ऐसे ही बुरे असर होते हैं मकान बनाने के समय यह ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि तह-खाने बड़े हों कि जिनमें वायुप्रकाश भली भांति आसके मकानों में हरसाल दो वार सफ़ैदी होना चाहिये पाख़ानों और सीढियों की सफ़ाई का विचार सब से अधिक रखना चाहिये ।

पानी की स्वच्छता।

जल की स्वच्छता रखने की बड़ी भारी आवश्यकता है क्योंकि इसके

स्वच्छ न होने से वनस्पति और कीड़ों के छोटे २ अण्डे शरीर के भीतर चले जाते हैं अत्यन्त भयानक रोग हैज़ा, पेचिश, मोतीज्वर (मोतीझरा) और दूसरे भयानक रोगों के कारण होते हैं वनस्पति और छोटे २ जीव जो पानी में पाये जाते हैं (चित्र नं० ३) से मालूम होंगे ।

पानी के साफ़ करने के लिये कई प्रकार के फ़िलटर (पानी साफ़ करने की कलें) और अनेक रीतिहैं परन्तु सब से सुगम और सहज रीति मेरे विचार में यह है कि एक तिपाई इस प्रकार की बनाई जावे कि जिसमें तलै ऊपर

शकल ३

वनस्पति वगैरह और जीवधारी जो पानी में होते हैं

खुर्दबीन से ऐसे नज़र आते हैं

तीन घड़े रक्खे जासकें और ऊपर के घड़े में पौन के आसरे पक्के बबूल के कोयले पीसकर डालदे, दूसरे घड़े में वालू रेत भरदे रेत को घड़े में भरने से पहले गरम पानी से दो तीन वार धो डाले और तीसरे घड़े के मुंह पर मोटा अच्छा साफ़ कपड़ा ढकदेना चाहिये कि पानी उसमें छनकर इकट्ठा हो १५ दिन पीछे कोयले बदल देने चाहियें और चौथे दिन कोयलों को हवा में सुखा लेना चाहिये जिससे जो प्राणपदवायु (आक्सिजन) पानी साफ़ करने में खर्च हुआ है वह फिर हवा से कोयलों में आजाने और महीने के महीने रेत, मटके और ' ,पड़ा बदल

देना चाहिये, जो ऐसा नहीं किया जायगा तो कोयलों का घड़ा पानी के छोटे २ जीवों का घर बनजायगा और पानी साफ़ करने की अपेक्षा उसे मैला कर देगा, इसी तरह सब भांति के फिलटरों में जो कारबन (कोयला) लगा रहता है, उसे चौथे दिन साफ़ करके हवा में सुखा लेना चाहिये, नहीं तो कैसाही उम्दा फिलटर क्यों न हो चार या पांच हफ्ते में मैलघर अर्थात् मलीन वस्तुओं का घर हो जायगा।

जिन घड़ों में पानी पीने का होता है उनको महीनेके महीने बदल देना चाहिये अक्सर देखा गया है कि घड़ों के

ऊपर एक तरह की सफ़ेदी नमकके समान जम जातीहै; फिरभी घड़ा नहीं बदला जाता, वह सफ़ेदी साफ़ जताती है कि घड़ा अब मैल का भंडार होगया अब जो पानी इसमें डाला जाताहै वह और भी ज्यादा मैला हो जाताहै, सफ़ेदी का तो कहना ही क्या है लेकिन कभी२ काई भी जम जाती है, मगर इस बातका लोग विचार नहीं करते और इसी कारण उस मटकी की मलीनता उसके पानी पीने वालों पर अपना असर करती है और अनेक प्रकार के रोग पैदा करती है सबसे साफ़ जलजो भली भांति इकट्ठा किया ज।वे तो मेंह का अथवा भफके का खिंचा हुवा है ।

व्यायाम (कसरत)

व्यायाम अर्थात् कसरत भी तंदुरस्ती क़ायम रखने के लिये बहुत ज़रूरी समझना चाहिये कसरत करते वक्त रग और पट्ठों के खिचाव से छोटी२ रगों का ख़ून दिलमें जाता है, और इसी से दिल की हरकत तेज़ मालूम होती है, क्योंकि जो ख़ून ज्यादा आया है, वह उस को जलदी फेफड़े में पंहुचाता है और फेफड़े का काम है कि बिगडे ख़ून को प्राणपद वायुके (आक्सिजन) द्वारा जो मनुष्य सांस लेते समय भीतर लेजाता है, साफ़ कर देता है इसी तरह सब शरीर

का ख़ून साफ़ होजाता है और ख़ूनकी चाल वहुत अच्छी तरह तेज़ हो जाती है, जिस से सब रग और पट्ठों में बल आजाता है, और दिलभी बलिष्ट (मज़-वूत) होजाता है यदि एक अंगुली में चोट लगजावे और उस के संग दूसरी नीरोग अंगुलीभी बांधीजावे और उस को कुछ कालतक हरकत करनेका अव-सर न मिलेतो आरोग्य (अछी) अंगुली भी कुछ काल तक वे काम हो जावेगी, जैसे खाट ढीली होजाती है और उस की अदवायन खिंचनेसे ठीक होजाती है, इसी तरह कसरत से मनुष्य के रग और पट्ठे ठीक होजाते हैं, कसरत और

स्नान में कम से कम एक घंटेका अन्तर होना चाहिये ।

प्रातःकाल उठ कर इतना अभ्यास अवश्य करना चाहिये कि कमसे कम ४० दराड करलेव और २०० हाथमुगदर के हिला लेवे, अथवा सूर्योदय से पूर्व कोस भर घूम आवे, या चार पांच मील घोड़े पर सवार होकर सैर कर आवे, इसी तरह गेंद बल्ला लान्टेनिस तैरना आदि अनेक कसरती खेल हैं, जिनसे रग और पट्ठों में हरकत होती है, बहुत ही फ़ायदेमन्द हैं शाम को भोजन के पीछे एक मील के आसरे धीरे२ चलनाभी अच्छा है, इसी तरह थोड़ी २ गाने की

महनत करना छाती और गले को ताक़त देता है, मनुष्य के शरीर का कोई भाग मुनासिब तौर की कसरत से इतना जलदी नहीं बढ़ता है, जितना कि फेफड़ा बढ़ता है, इस बात के लिखने की तो ज़रूरतही नहीं कि इस अंगकी कसरत की कितनीबड़ी जरूरत है क्योंकि जितना अधिक ताक़तवर फेफड़ा होगा उतना ही उन जीव जन्तु और अनेक प्रकार की अशुद्ध वस्तुओं का जो सांस लेते वक्त भीतर जाते हैं और जिनसे बहुत प्रकारके रोग पैदा होते हैं, थोड़ा असर होगा, बहुधा उन लोगों की जिन्हों ने इस अंगकी कसरत को कुछ कालतक

नियम से की, तो छाती कई अंगुल बढ़गई सब से उत्तम रीति इस कसरत की यह है कि हवा से जहांतक हो सके फेफड़े को भरे और फिर बड़े वेगसे ख़ाली करदे, अर्थात् ज़ोरसे सांस खेंचे और ज़ोर से निकाल देना यह कसरत ५ मिनट से लेकर आध घंटे तक दिनमें दो या तीन बार करे ।

स्नान ॥

तनदुरुस्ती रखने के लिये न्हाने की भी बड़ी ज़रूरत है, क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर के छिद्र (मसा मात) साफ़

शकल ८

खुजली के कीड़ों की सूरत जैसी खुर्दबीन

से दीखती है
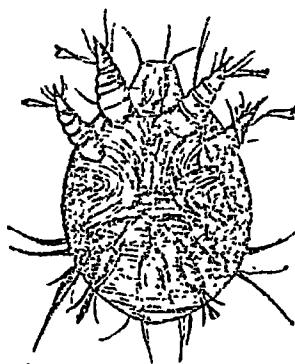
हैं वह अवश्य नीरोग रहेगा, जब कि छिद्रों में मैल भरजाता है, शरीरका असली मनोहर रंग बिगड़ जाता है, एक मलीन काला रंग दीख पड़ता है और यह अवस्था तब होती है, जब कुछ दिन स्नान न बन पड़े, यदि इस हालत में स्नान न करे और थोड़े दिन और बीत जावें तो, शरीर के चमड़े पर आठ पांव वाले छोटे २ कीड़े पड़ जातेहैं और यही कीड़े खुजली आदि त्वचा के रोगों के कारण होते हैं और शरीर के छिद्रों में मैल भरजाने से गुरदे की चेष्टा में फ़र्क पड़ता है, जिससे गठिया, दर्दगुरदा, पथरी, जलंधर आदि उत्पन्न होते हैं,

इस लिये नित्य स्नान करना उचित है, जो किसी कारण नित्य स्नान न बन पड़े तो हफ्ते में तीन बार तो अवश्यही करें।

ठंडे जल से न्हाना अति लाभदायक है और कमज़ोर और नित्य गरम जल से स्नान करने वालों को गरम पानी से न्हाना उपयोगी है, चाहिये कि एक घड़े पानी से न्हावे और पांच सात लोटे शरीर पर डाल चुके तब एक नरम अंगोछे से धीमे २ शरीर को रगड़े और पानी डाले, इस प्रकार तीन बार करे, ताकि शिर से पांव तक सब छिद्रों का मैल दूर होजावे और स्नान के समय थोड़ा साबुन काम में लाना भी लाभदायक

है, इस तरह जो मनुष्य स्नान करता रहेगा वह सदा तन्दुरुस्त रहेगा।

भाग दूसरा ॥

माता पिता का कर्तव्य ।

माता पिता की हमेशा यही इच्छा रहती है कि उनकी सन्तान निरोगी रहे, आज्ञाकारी और सुखी होवे और संसार में आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करे, इस लिये उनको उचित है कि अपने बालकों की तन्दुरुस्ती का पूरा ध्यान रक्खें, बच्चे के खान पान और

वस्त्रों का प्रबन्ध उत्तम करें, खाना हलका ऐसा खिलावें जो जल्दी पचजावे और तीन या चार बार नियत समय पर ही खिलावें और शरीर वस्त्र से भली भांति ढका रक्खें और शीतकाल (जाड़ा) में इस बात का पूराही विचार चाहिये छाती के ढके रहने का सबसे ज्यादे यत्न करें और वस्त्र जहांतक हो सके नरम गरम और हलके होने चाहियें।

बच्चों को तीन बरस की उमर तक प्रसन्न चित्त और स्वतन्त्र रखने का उद्योग करना उत्तम है इस उमर में कभी ज़ोर से धमकाना या क्रोध करना न चाहिये, न किसी प्रकार का भय देना

चाहिये जैसे हाऊ आदि, प्रयोजन यह है कि कोई बात ऐसी न होनी चाहिये कि जिससे अचानक भय उन बच्चों के चित्त में जम जाय क्योंकि ऐसा भय बहुतसे रोगों का कारण होता है, यदि दैवयोग से किञ्चित् रोग होजावे तो शीघ्रही उसका यत्न करना चाहिये, न कि जबतक कि रोग बढ़जावे कुछ उपाय उसका न किया जाय, क्योंकि समय पर औषधि न देने से पीछे बहुत चिन्ता करनी पड़ती है और पछतावा होता है, इन बातों का विचार न रखने से बालक प्रायः निर्बल होजाते हैं और यह भूल उनकी उन्नति (तरक्की) में बहुत हानिकारक है, जिस

से युवावस्था (जवानी) में न तो उन के मुख पर लाली आती है, न क्रान्ति (रोशनी) बढ़ती है और अङ्ग ताक़तवर नहीं होते हैं ।

मा बाप को बालकों की सङ्गति का भी पूरा विचार रखना चाहिये, क्योंकि यह वो बात है कि जिसके आधीन आगे की उन्नति है ।

यह समय ८ बरस की उमर से १४ बरस तक समझना चाहिये, इस अवस्था में ईश्वर न करे कि बुरे विचार उनके चित्तमें समाजावें तो उनका दूर होना कठिन और असाध्य होजायगा इसी कारण आजकल के नौजवान

बुरी सङ्गति से ऐसी बुरी आदतें डालतें हैं, जिससे अत्यन्त भयानक रोगों की नीव पड़जाती है, जिनसे उमर भर उनका छुटना कठिन होजाताहै, मानो जीवन बिलकुल निष्फल होजाता है।

बुरी संगति का पहला बुरा फल।

(हस्त मैथुन, पुरुष मैथुन)

पाठशाला और बोर्डिंगहाउस में बुरी सङ्गति से बहुत से विद्यार्थियों के विचार ख़राब होजातेहैं जिनसे विषय-भोग की इच्छा होती है और वे इस इच्छा को हस्तमैथुन द्वारा पूरी करते हैं यह समय १३ बरसकी उमर से आरम्भ होताहै, इस बातकी पूरी खोज करनेसे मालूमहोगा कि सौमें से ३० लड़के भी

कठिनाई से ऐसे मिलेंगे जो इस दुष्ट चेष्टा से अपने को न बिगाड़तेहैं।

इस दुष्कर्म के थोड़ेही दिन करने से वीर्य्य पतला पड़कर निर्बल होजाता है इन्द्री की नसें कमज़ोर तथा ढीली हो जाती हैं उनमें अन्तर पड़जाता है। इन्द्री टेढ़ी बांकी हो जाती है और उसकी बनावट बिगड़जाती है एक तुच्छ आनन्द दिलाने वाले विचार से वीर्य्य निज स्थान छोड़कर बहने लगता है जो प्रमेह, शुक्रदोष, स्वप्नदोष आदि रोगोंका निमित्त होता है यदि यह दशा और भी ख़राब हुई तो निम्नलिखित दोष दीखपड़तेहों:—

जैसे शरीर के सब अङ्गों में निर्बलता तबीयत का सुस्त रहना, सिरमें दर्द,

ज्वरांश, चहरा पीला, आंखोंमें गढ़े पड़-जाने, स्मृतिशक्ति घटजाना; नींद का नहीं आना दृष्टि कम होजानी, मनो-योग के कामों में जैसे कि रेखागणित, वीजगणित आदि के उत्तर लाने में वहुत जल्दी थकान होजानी। अंडकोशों में पीड़ा, और मनुष्य का अल्प वीर्य्य होकर प्रायः नपुंसक होजाना आदि।

यदि इस अवस्था का भी उपाय न हुवा तो अत्यन्त कठिन रोग विषम-ज्वर, मिरगी आदि में ग्रसित होकर जीव त्याग कर देता है ऐसेही वुरे परिणाम अतिमैथुन व पुरुषमैथुन के होते हैं।

वुरी संगत का दूसरा फल परस्त्रीगमन।

जव मनुष्य युवावस्था को पहुंचता है,

मुख पर कान्ति, शोभा, अङ्गों में बल आने लगता है, तात्पर्य्य यह है कि वह समय आता है कि यदि जवान अपने इस उन्नति के काल की रक्षा करे तो उमर भर के लिये तन्दुरुस्ती का भण्डार सञ्चय कर लेवे।

इस अवस्था में बहुधा इच्छा मैथुन की रहती है, जो बीस बरस तक नौ-जवान अपने बिचार शुद्ध रक्खे और पूरी रक्षा करे तो अवश्य संसार में पुरुषार्थी विद्यावान् और बुद्धिमान् हो और ऐसेही पुरुष अन्तकाल तक अपने जीवन का फल भोग सक्ते हैं।

इन सब बातों के सिद्ध करने के लिये मा बाप को उचित है कि अपनी

सन्तान को ऐसी युक्ति से सावधान करदें कि बुरी सङ्गत के दुष्ट फलों के चित्र उनके हृदय में खिंच जायें और इस उमर में कदापि निकम्में न बैठे रहैं, विद्या और अनेक कलाओं के सीखने में उद्यत रहैं।

यदि बुरी सङ्गतिकी ओर मनका झुकाव न हुवा और विद्याके सम्पादन करने में चित्त लगगया तो अवश्य इस काम में सफलता प्राप्त करैंगे, यदि इस अवस्था में निकम्मे रहे या बुरी सङ्गति हुई तो चित्त मैथुनानन्द भोगने को झुकजायगा, फिर इन जवानों को आगेकी उन्नति का विचार जाता रहेगा,

और सब भावी आशा, उन्नति, तन्दुरुस्ती और सुन्दरता के नष्ट करनेपर तत्पर होजांयगे और व्यभिचारिणियोंमें लम्पट होकर तुरन्त अपने को असाध्य रोगोंमें फँसादेंगे।

व्यभिचारके बुरे फल ।

(गरमी, सुज़ाक और स्त्री पुरुषों में विरोध)-

गरमी ।

इस रोगकी उत्पत्ति एक प्रकार के विष से है जोकि मैथुन के समय इन्द्री के ऊपर असर कर जाता है, पहले इन्द्री

पर चट्टें पड़जाती हैं अर्थात् ताम्रवर्ण चिन्ह होजाते हैं, फिर जगह तड़ख़कर उसमें पीप बहने लगता है, और यही चट्टें घाव बनकर दिन २ बढ़ते जाते हैं और बहुधा कई घाव होजाते हैं और जो रोग अधिक बढ़गया तो सब शरीर का ख़ून ज़हरीला होजाताहै, हाथ की हथेली और पैरके तलवों में काले चिन्ह देख पड़ते हैं और यही कालेदाग़ घाव होजाते हैं और सब शरीर पर इसी तरह काले दाग़ होकर घाव बनजाते हैं अगर उन ज़ख़्मों का मवाद किसी तन्दुरुस्त आदमी के लग जाय तो उसको भी यही रोग होजाताहै, ऐसी हालतमें रोगी से सर्वथा

अलगरहना चाहिये, उसके साथ खान पान और उसके वस्त्र पहनने और एक शय्या पर सोनेसे भी इस रोग के होनेका डरहै ।

जो बीमारी और ज़्यादा बढ़े तो तालुमें छेद पड़जातेहैं और रोगी उमर भर गुनगुना कर बोलता है, श्रवण (सुनने) में फ़र्क़ पड़जाता है और कुछ काल पीछे मनुष्य बहुधा अन्धा और बहरा होजाताहै और इन्द्री पर अर्बुद (केन्सर) होजाता है, यह एक प्रकार का ज़हरीला फोड़ाहै कि जिस्में मांस बढ़ताहै, इसका इलाज सिवाय इन्द्री को काट डालने के अभीतक मालूम नहीं हुवाहै ।

बहुधा गठिया होजाने से रोगी के सब शरीर में बहुत पीड़ा रहती है, यदि इसका उपाय नहीं हुवा तो सब शरीर के ख़ून की चाल सुस्त पड़कर मनुष्य को (फालिज) की बीमारी होजाती है, यह बीमारी अक्सर हाथ और पांव से शुरू होती है, पहले हाथ और पांव हरकत करने से रहजाते हैं, फिर आहिस्ता २ सब शरीर सुन्न पड़जाता है, और रोगी यमपुर वास करता है।

इस रोग का फल केवल यही नहीं भोगते किन्तु उनकी निरपराध स्त्री व सन्तान भी भोगते हैं, जैसा कि नीचे लिखे हुए हालसे जाना जायगाः—

(इस कहनावत के अनुसार कि सिर मुंडातेही ओले पड़े) एक मनुष्य को पहली बार मैथुन के पीछे (आतशक) गरमी के चिन्ह दीखे कुछ काल तक तो छिपाये रहा यहां तक कि रोग बढ़ गया और पीड़ा अधिक होने लगी उस वक्त उसनेउसका गुप्त इलाज करना आरंभ किया और ऊटपटांग औषधि सेवन करने लगा, इससे रोग शान्ति होना तो दूर रहा किन्तु एक दो नये रोग और खड़े होगये, कुछ काल पोछे दोनों जांघों में बदें होगईं और उन में पीप भी पड़गई तो चीरा देने की ज़रूरतहुई, इस लिये दोनों ओर जांघों में घाव पड़

गये और जो कि शरीर का सब ख़ून पहिले ही विषैला होगया था, इस कारण घाव अच्छे नहीं हुवे और फिर उनमें नासूर पड़ गये, निदान उसने जुदे २ इलाज करने वालों की राय से छः बार चीरा लगवाया परन्तु कुछ आराम न हुवा, अन्त को दैवयोग से एक हकीम की दवा अनुकूल पड़ी और उससे कुछ फ़ायदा हुवा, उस समय उसके मा बाप की बुद्धिमानी को देखिये कि उसका विवाह करादिया थोड़े दिन पीछे उस बेचारी अबला को भी उसी रोग की प्रसादी मिली, कुछ दिन तो उसने भी उसको लज्जा के मारे छिपाया, यहां तक

कि उसके सब शरीर पर माता जैसी फुन्सियां होगईं. उस निर्दोषी की दशा को देखकर बड़ी दया आती थी और दिल को भय लगता था, आख़िर को फिर एक इलाज तबियत के अनुकूल पड़ा और उससे कुछ लाभ हुआ ।

तात्पर्य्य यह है कि इन दोनों स्त्री पुरुषों की यह दशा हुई थी कि जब किसी औषधिका सेवन किया तो कुछ कालको आराम होजाताथा, मगर गरम ऋतुमें जब आंम और खरबूज़ों की फ़सल आती तो बीमारी भी ज़रूर आकर झुक कर सलाम करती कुछ काल पीछे उनके एक पुत्र हुवा और वह ८ ही

दिनका हुवा था कि गरमी के ज़ख़्म उसके शरीर पर दिखाई दिये, उसकी ओषधि होने लगी, उस वक्त़ तो उसको आराम होगया, मगर ४ वर्षके बाद फिर बीमारी ने ज़ोर किया, जिस्में कि उसकी एक आंख जातीरही और आठ बरस की उमर में मिरगी के रोगसे मरगया।

इसलिये उचित है कि जो मनुष्य इस रोग में फँसचुके हों वह आराम होने पर भी दो बरसतक विवाह न करें, इसी तरह जो लोग ख़ूनविकार, तपैदिक़, मिरगी, उन्मादादि रोगोंमें फँसे हों तो जबतक आराम न हो कदापि विवाह नकरें।

सुज़ाक ।

यह रोगभी बहुधा मनुष्य को व्यभि-
चारिणियों से होता है—एक प्रकार का
विष है जो इन्द्रिय द्वारा मूत्रमार्ग मेंअसर
कर जाता है, जिस से मार्ग में घाव पड़-
जाते हैं और जलन मालूम होती है और
मूतते वक्त बड़ा कष्ट होता है, और एक
प्रकार का पीतवर्ण का पीप इन्हीं घावों
से निकलने लगता है, जब पीप बहुत
निकलने लगता है तो दुःख कम मालूम
पड़ता है, यदि यह पीप आंख के लग

जावे तो आंख में फूला होजाता है और अण्डकोश सूजजाते हैं, इस रोगमें गाठिया होजाने से रोगी के सब अङ्गोंमें बहुत पीड़ा होती है और उसको एक पैंड चलना भारी होजाता है।

ऐसे समयमें जबकि पीप जारीहो मैथुन करना केवल रोगी को हानि-कारक नहीं होता किन्तु उनकी बिचारी निरपराध अबला भी इस रोग में ग्रस्त होती हैं ।

बहुधा देखागया कि औषधि सेवन की, तो आराम होगया, पर जब उसमें किंचित् मात्र भी कुपथ्य करा तो रोग ज़ोर पकड़ जाता है, निदान

समय पर पूर्ण चिकित्सा न होने से मनुष्य उमरभर इस रोग में फँसा रहता है, आराम होने के पीछे प्रमेह (जिरयान) होजाता है, जिससे मनुष्य का सब शरीर शिथिल होकर प्रायः नपुंसक होजाता है

स्त्री पुरुषके परस्पर विरोध।

परस्त्रीगमन के केवल यही ख़ौफ़नाक जो ऊपर बयान किये परिणाम ही नहीं हैं बल्कि कुछ और भी

हैं जो नीचे लिखे जाते हैं:—

अपनी सुन्दरता, अरोगता, बल, बुद्धि, और प्रतिष्ठा का नाश, अपने हितैषी मित्रों में तुच्छता, अपनी बीबी और औलाद के लिये आफ़त, जगत् की धिक्कार सहना इत्यादि व्याधियां द्रव्य ख़रच करके हासिल करना कौनसी दानाई और बुद्धिमानी की बात है।

कोई ऐसा कहते हैं कि अपनी स्त्री से शृङ्गार की रसीली प्रेम भरी बातें करना या उसको भोगविलास में अति आनन्द देने का उद्योग करना या कि अत्यन्त उत्तम २ वस्त्र आभूषण

तथा सुगन्ध आदि पदार्थों से शोभित करना वृथा है, यदि चित्त ऐसा चाहे तो इसका कहीं बाहर ही उपाय कर-लेना उत्तमहै, मुझको इनकी बुद्धि-मानी पर सख़्त अफ़सोस आता है क्योंकि ये लोग अपनी औरत के साथ सब उचित हक्क धूलमें मिलाकर उस पर बड़ा ज़ुल्म करते हैं, या यह कहना चाहिये कि ऐसे आदमी निरे जड़ अज्ञानी और मन्दभागीहैं, मैं उनसे पूछताहूं कि आप तो अपना आनन्द वाहर लूटें तो बतलाओ कि वह बिचारी अपना मज़ा कहां हासिल करैं क्या वहभी आपकाही मार्ग

अख्तियार करें ? और अपनी प्रतिष्ठा को धूलमें मिलावें और कुलका नाम डुबोवें ।

विचार करने की बात है कि यदि पुरुष को अपनी पत्नी के व्यभिचार का सन्देहमात्र भी होजावे तो कितना क्रोध आता है कि प्राण लेने तकको उतारू होजाता है ।

निदान जब पुरुष अन्य स्त्री पर आसक्त होगा तो सोचिये कि उस दिन अबला के चित्तपर कितनी भारी चोट लगेगी और कितना क्रोध आवेगा, जो स्त्री पतिव्रता है तो दुखके सागर में डूबकर अनेक रोगों में फँसेगी और जो इसके

विपरीत है तो अपनी प्रतिष्ठा खोकर कुलको कलंक लगावेगी।

खूब समझना चाहिये कि मालिक न करे कि किसीके घरमें व्यभिचारिणी स्त्री हो, यदि ऐसा हुवा तो घरकी बरबादी और आगे की सन्तान के बिगड़ जाने का डर है क्योंकि जो लड़की हुई तो प्रायः व्यभिचारिणी और लड़का हुवा तो प्रायः आप परस्त्रीगामी होना मानो अपनी स्त्री को व्यभिचार का पाठ सिखलाना है, ऐसी दशा में प्रकृतियों का परस्पर मिलना नामुमकिन है, जिसके कारण सदा लड़ाई झगड़े और अनेक फ़साद होते रहते हैं।

ऐ सज्जन पुरुषो ! यदि शास्त्रानुसार देखा जावे तो सब इस बात को मानेंगे कि पुरुष संसार में आधा और दूसरा आधा भाग उसकी पत्नी है, अर्थात् जीवन का सच्चा स्नेही (जीवनमूल) कहा जावे तो ठीक है जिसके वास्ते संसार के आनन्दरूप तुमही हो और यही तुम्हारी आपत्तियों में सहायक है, इसलिये विचार रखना चाहिये कि तुम्हारे सब संसारी सुख के आधे भाग की अधिकारिणी वा स्वामिनी है उस पर इतना अन्याय करना और उसको शोक-सागर में डबोना यह पशुपन नहीं तो क्या मनुष्यपन है ?

ऐ सज्जन पुरुषो । नीति मत छोड़ो, अपना पूरा फर्ज़ अदा करने पर कमर बांधो ताकि अपार खुशी और आराम के खज़ानेके मालिक होवो । जबकि स्त्री पुरुषमें अत्यन्त प्रीति होती है तो ऐसी अवस्था में जब मनुष्य अपनी नौकरी, या दूकानादि के कामसे निवट कर घर आता है तो कैसा आनन्द बरसता है कि सब दिन की थकान एक मिनट की बातचीत से दूर होजाती है और सूरत के देखते ही दिल कमल की नाईं खिल जाता है. जैसे विद्वानों ने कहा है:—

जहां सुमति तहां सम्पति नाना ।
जहां कुमति तहां विपति निदाना ॥

यदि सच पूछो तो जीवन ऐसे ही मनुष्यों का सफल है- यदि ये लोग मैथुन की रीति पर भलीभांति चलें तो अवश्य अपनी प्रीति का उत्तम फल पासक्ते हैं अर्थात् उनकी संतान सुंदर, विद्वान्, वलवान्, अरोग और आज्ञाकारी पैदा होसक्ती है।

और जहां स्त्री पुरुषों में परस्पर विरोध रहता है, नौकरी या कि दुकान पर से शामको मकान पर थके हुए आये इस ख़याल से कि कुछ आराम मिलेगा लेकिन घरमें घुसतेही तकरार फ़साद और झगड़ा होनेलगा उसवक्त वतलाइये कि दिलको किस क़दर

सख्त नागवार गुज़रता है, उधर तो दूकान थाकि दफ्तर की सख्त महनत और इधर सदा की फटकार और हाय हाय, मानो जीतेही नरकवास है।

इस परस्पर विरोध का फल केवल स्त्री पुरुष पर ही नहीं होता किन्तु उसका असर उनकी सन्तान पर भी होता है, और ऐसी दशामें सन्तान स्वार्थी, नाफ़रमाबरदार, बलहीन, सदा-रोगी और लड़ाका होती है।

हरकोई विद्वान् फौरन बालक को देखकर यह निश्चय कर सक्ता है कि इसके माता पिता में प्रीति है कि नहीं।

नशे की चीज़ें।

सब भांति की नशीली चीज़ों से बिलकुल बचना चाहिये—नशीली चीज़ों से कुल शरीर के हिस्सों पर असर बहुत बुरा होता है।

थोड़े काल में मनुष्य निर्बल हो जाता है और दुष्ट रोग गठिया, मन्दाग्नि, रक्तविकार; कलेजे के रोग, फेफड़े और दिल आदि के रोगों में फँसता है, बड़ा भारी कारण प्रमेह और नपुंसकता का होता है. जो मर्द वा औरत शराब या और नशे की चीज़ें काम में लाते हैं इससे उनकी सन्तान बहुधा निर्बल

और मतिमन्द होकर खूनविकार आदि रोगोंमें पड़ती है, और मुख्यकर गर्भ की दशामें नशेकी वस्तुओं का सेवन उस नये पोदे (बालक) के वास्ते उमरभर दुःख की सामग्री पैदा करने वाला है।

आसनों की तसवीरों वा बेहूदा कितावों का देखना नौजवानों के चित्त पर बुरा असर पैदा करता है, ख़याालात ख़राव होनेसे मैथुन की इच्छा होती है, जो प्रमेह आदि का मूलकारण है, और अकसर यही दुष्ट विचार व्यभिचार की ओर झुकादेते हैं।

सिवाय नियत समय के स्त्रीसे न तो कामोद्दीपन की बातें करे न

होजावें तब पतली खिचड़ी खावें।

नीचे लिखे दो नुसख़े जलन दूर करने और पेशाब (मूत्र) अधिक लाने के लिये बहुत उपयोगी हैं।

स्पिरिट इथर नाईट्रोसी (Spirit Æthir Nitrosi) डेढ़ आउंस।

टिंक्चर हायो सिमि याई (Tincture Hyos cyami.) २ ड्राम।

पुटास नाइट्रास (Potass Nitras.) २ ड्राम।

पानी (Aqua Pura.) १२ आउंस।

सब औषधियें मिला कर तीन २ घंटे के अन्तर में एक एक आउंस पीवें।

(२) पुटास ब्रोमाइड (Potass Bromide.) २ ड्राम।

टिंकचर हायोसिमियाई (Tincture

Hyoscyami.) २ ड्राम।

टिंकचर बकूकू (Tincture Bucku) १ आउंस।

स्पिरिट ईथर नाईट्रोसी (Spirit Æther Nitrosi) १ आउंस।

पानी १२ आउंस।

सब औषधियें जलमें मिलाकर तीन २ घंटे के अन्तर में एक एक आउंस पीवे।

(३) नुसखा मवाद बंद करनेके लिये बहुत लाभकारी है।

लीकर पोटास (Liquor Potass) ३ ड्राम।

संदलका तेल (Sandal wool oil) ३ ड्राम।

टिंकचर आरेनाशियाई (Tincture aurantia) १ आउंस।

म्यूसिलेजी अकाशिया (Mucilage acacia)
१ आउंस ।
पानी १६ आउंस ।
इन सब औषधियों को मिलाकर फिर पानी मिलावें, दिन में तीन वार खाना खानेके पीछे एक एक आउंस पीवें।
(४) आइल कोपेवा (Oil copaiba.) ४ ड्राम । आइल क्युवब (Oil cubeb.) २ ड्राम। म्युसिलेज अकाशिया (Mucilage acacia.) २ आउंस ।
आइल सिन्नमान (Oil cinnamon.) १५ बूंद।
पानी १५ आउंस ।
सब औषधियें मिलाकर पीछे पानी मिलावें, दिन में तीन वार खाना खाने के

पीछे एक एक आउंस पीवें।

(५) यदि कमर में अधिक पीड़ा हो तो इस ओषधिका सेवन करें।

ऐक्सट्रेक्ट बलेडोना (Extract Balladona.) २ ग्रेन।

मारफिया हाईड्रो कलोरिड (Morphia Hydro chlorote.) २ ग्रेन।

कपूर (Camphor.) १२ ग्रेन।

आइल थ्यो ब्रोमेटिस (Oil theo bromatis.) २० ग्रेन।

आठ गोलियें बनावे, सोते समय १ गोली नित खालेवे।

(६) दारचीनी ५ माशे मिर्च शीतल ४ तोले, गंदे बेरोज़े का सत २ तोले, कल-

मीशोंरा दो तोले, आंवला २ तोले, कावली हड़ ४ तोले ।

इन सब औषधियों को कूट पीस कर २१ पुड़िया बनावें, और चार २ घंटे के अन्तर में एक २ पुड़िया ठंढे जल के साथ फांक लेवें ।

पिचकारी के नुसखे ।

सलफ़ो कारबोलेट आफ़ ज़िंक (Sulpho carbolate of zinc)२० ग्रेन ।

पानी टपकायाहुआ १० आउंस मिला कर रीति अनुसार दिन में तीन चार बार पिचकारी लगावें ।

(८) कारबोलिक एसिड (Carbolic Acid.) २० ग्रेन ।

पानी ५ आउंस मिलाकर दिनमें पांच ६ बार पिचकारी लगावें ।

(९) बोरिक ऐसिड (Boric Acid.) १६ ग्रेन ।

दो आउंस पानी में मिलाकर पिचकारी लगावें ।

(१०) आईडो फार्म (Idoform.) ३० ग्रेन ।

तीन आउंस पानी में मिलाकर पिचकारी लगावें।

(११) पुटासी परमेंगनस (Potass Permanignas) २ ग्रेन ।

चार आउंस पानी में मिलाकर पिचकारी लगावें।

(१२) नींबूके पत्ते इमली के पत्ते, नीब के पत्ते, और जामन के पत्ते प्रत्येक २ तोले, पानी आधसेर भरमें सबको औटा कर (जोशदेकर) पिचकारी लगावें।

अफीम १ मशा, गेरू ६ माशे, सारथोथा ३ रत्ती, सफेदा काशगरी १ माशा, रसोत १ माशा गोंद बबूल १ तोला ।

पहले गोंद को १५ तोले पानी में घोटें (हलकरे) फिर रसोत उसमें हल करें पीछे सब औषधियों को महीन पीस कर उसीमें मिलावें और छानकर दिनमें तीन बार पिचकारी लगावें ।

प्रकरण तीसरा ।

उपदंश (गरमी-आतशक) के नुसखे ।

चाहिये कि पहिले घावों (ज़ख़्मों को) नीचे लिखे जल (अर्क) से धोवें और फिर मल्हम लगावें—

पुटासी परमें गेनस (Potassi Permanganas.) १६ ग्रेन ।

पानी २४ आउंस अर्थात् एक बोतल मिलाकर धोवें ।

गरमी का मलम ।

(२) खोपरे का तेल ४ तोले, मोम ९ माशे, (गरम ऋतुमें एक एक तोला) दोनों को मिलाकर आग पर गरम करें

जब ठंडा होजावे आईडो फार्म (Idoform.) ४ ड्राम उसमें मिलावें और मल्हम बनावें दिनमें तीन ३ बार पट्टी पर लगाकर लगावें।

(३) खोपरे का तेल ४ तोले मोम ६ माशे आग पर पिघला कर ठंढा करले और मुरदासंग १ तोला पपड़िया कत्था ३ या ६ माशे महीन सुरमेसा पीस कर मिलावें और दिनमें चार बार ज़ख़्मों केलगावे।

गरमी के नुसख़े।

अर्क गोली आदि जो दिन में तीनबार सेवन करना चाहिये।

उसबा मग़रबी २ तोले, पित्तपापड़ा ६ माशे, काशनी ६ माशे, चन्दन का

चूरा ६ माशे ।

इन सब औषधियों को आधपाव उबलते हुवे गरम पानी में एक घंटे चीनी या काच के बरतन में भिगोवें, फिर छानकर उसमें ६ ग्रेन पुटास आयोडाइड (Potass Iodide.) मिलावें, और दिन में तीन वार सेवनकरें, यह दवा १ दिन के वास्ते समझना चाहिये —

(५) पुटास आयो डाइड (Potass Iodide.) ४ ग्रेन ।

स्पिरिट अमोनिया ऐरोमेटिक (Spirit-ammonia aromatic) ३० बूंद ।

(सीनम) टिंकचर संकोनिया कम्पो उड (Tincture cinchonia co.) १ ड्राम ।

पानी १ आउंस, १ दिनमें तीनबार पीवें। यह एक दिनका नुसखा है। यह दवा एक महीने तक बराबर पीते रहें।

(६) हाईडररजरी पर कलो राइड (Hydrargyri parchloride.) १ ग्रेन।
अमोनिया क्लोराइड (Ammonia chloride) १० ग्रेन।

ऐक्सट्रेक्ट सारसी लिक विड (Extract sarsiliquid) १२ आउंस।

इन सब औषधियों को मिलाकर दिनमें २ बार एक एक ड्राम एक एक आउंस पानी में डालकर पीवें—

(७) हाइड्रारजरी कम किरीटा (Hydrargyr.icum creta.) १२ ग्रेन।

एक्सट्रेक्ट कोनाई (Extract Conii.) १८ग्रेन।

इन दवा की ६ गोलियें बनावें, और दिन में तीन वार खावें।

(८) तीन माशे पारे को ३ माशे आंवलासार गन्धक के साथ खूब खरल करें, और उसकी ४८ पुड़िया बनावें, और दिन में दो तीन वार २ माशे गुलकंद में खावें, और उसके पूरा होजाने पर नुसखे नम्बर ४ को वीस दिन तक पीवें।

(९) हाईड्रारजरी कम क्रीटा ३ ग्रेन ।
कौनैन सल्फ (Quinine Sulph) ३ ग्रेन ।
ऐक्सट्रेक्ट जैनशियन (Extract Gentian) ४ ग्रेन ।

इन सबकी तीन गोली बनावें, और दिन में दो या तीन गोली खावें बाद खाना खाने के, यदि आयोडाइड पुटास केमिले हुवे (Iodide potass.) नुसखे अनुकूल न पड़ें तो उनकी जगह नीचे लिखे हुवे नुसखे सेवन करें —

(१०) सोडा आयोडाइड (Soda Iodide. १ ड्राम ।

ऐक्स ट्रेकट सारसी लिकाविड (Extract Sarsi liquid) १ आउंस।

पानी आठ आउंस मिला कर एक आउंस दिन में तीन बार पिया करें

(११) अमोनिया आयोडाइड (Ammonia) Iodide.) १ ड्राम ।

टिंकचर कलम्बा (Tincture Calamba.)
६ ड्राम ।

सब दवा १२ आउंस पानी में मिला कर १ आउंस दिन में तीनवार पीवें ।

(१२) उसबा १ आउंस, कासनी १ आउंस चोबचीनी १ अउंस, चिरायता २ ड्राम स्पिरिट मैन्था पेपरिट (Spirit Mentha Piparate.) ... . ४ ड्राम । दारचीनी २ ड्राम,

इन सब औषधियों को २४ आउंस पानीमें जोशदें, जब एक उफान आवे तब उतार कपड़े में छान कर पीछे स्पिरिट मैन्था पेपरिट डालें, और २ ड्राम आयोडाइड आफ़ अलो-

निया (Iodide of Ammonia.) या आयो डाइड आफ़ सोड़ा (Iodide of soda.) मिला लें, और २४ खुराक करे, दिंनमें तीन वार पीवें।

(१३) पारा या आईडियन (Iodine.) का असर दूर करने के लिये कुछ काल तक ऊपर लिखे नुसखे विदून आयो-डाइड आफ़ अमोनिया या सोड के सेवन कर सक्ता है।

(१४) हाईड्रारजरी परकलोराइड (Hydrargyri Per chloride.) .... १ ग्रेन
अमोनिया कलो राइड (Ammonia chloride) ३० ग्रेन।
पुटास आयोडाइड (Potass Iodide) ३० ग्रेन

उसवा १ आउंस, दारचीनी १ तोला।

पहले तो उसबे और दारचीनी को कुटै फिर तीन पाव पानी में जोशदे, जब उबाल आजाय उतार छानकर ऊपर लिखी औषधियें एक जगह कर के उनपर ४ ड्राम के आसरे डालें, जब औषधियें मिलजावें तब बाक़ी दवा मिलादेवें और २४ खुराक करें नित्य दिन में तीन बार पीवें।

(१५) ग्रीन आयोडाइड आफ़ मरकरी (Green Iodide of Mercury.) १२ ग्रेन।

एक्सट्रेक्ट जैनशियन (Extract gentian.) १ड्राम।

अफीम ५ ग्रेन, सब दवा की २४ गोलियें बनावे, दो या तीन गोली नित खावे, यह गोलियें शीघ्रही घावको सुखा देतीहैं, सब शरीरके काले चिन्ह दूर होजातेहैं, यदि मुंह या दांत में दर्द हो तो थोड़े दिन औषधिका सेवन छोड़दें।

चौथा प्रकरण।

जिसमें थोड़ेसे कई भांतिके लाभकारी नुसखे लिखेहैं।

हैज़े और अन्य रोगों के माद्दे (गन्दगी) दूर करनेके लिये निम्न लिखे नुसखे सेवन करे।

(१) कारबोलिक एसिड (Carbolic acid) १ आउंस।

पानी १ आउंस ।

(२) क्रियेज़ोट (Creasote) १ आउंस ।

इनमें १० आउंस पानी मिलाकर रोगी के उलटी और मल पर छिड़के ।

निर्बल रोगी और छोटे बालकों के लिये दूध तैयार पथ्य करने की विधि

गौ का दूध आधसेर उसमें पाव भर पानी डाल कर पांच मिनट तक जोश देकर उतारले, और १५ ग्रेन सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) मिलाकर २ तोले मिश्री या सफ़ैद बूरा मिलाकर पियाकरे

(३) या बाईकारबोनेट आफ़ सोडा (Bicarbonate of soda.) की जगह लाइकर

केलसिस वा लाइम वाटर (Liquor Calcis or lime water.) डेढ़ या दो आउंस मिलावें या आध सेर दूधको ५ मिनट तक जोश देकर पावभर आशजो मिलावें ।

आशजौ बनानेकीविधि ॥

आध पाव जौकी भूसी जुदी करें और ५ मिनट थोड़े पानी में जोश दे, और फिर उस पानी को निकाल डालें और आधसेर उबलता हुवा पानी डालकर जोशदें जब आधा रहजावे नीचे उतार छानलें और आधी छटांक मिश्री मिलावें ।

दूध सदैव निरोग गाय भैंस आदि का लें, वहुधा देखा गया है कि मवेशी नाना भांती के रोगों में ग्रसित होते हैं — घोसी उनको लीद व सड़ी वस्तु खिलाते हैं, फिर भी लोग उनका दूध पीते हैं — ग़लीज़ दूध की सूरत जैसी कि खुर्दबीन से मालूम होती है, शकल नं ६ से मालूम होगा — इसी प्रकार भोजन स्वच्छ और नवीन (ताजा) होना चाहिये ।

गला सड़ा न हो—जिसमें दुर्गन्धि और फफूंदी न हो, क्योंकि ऐसे भोजन से कई प्रकार के छोटे २ कीड़े शरीर में
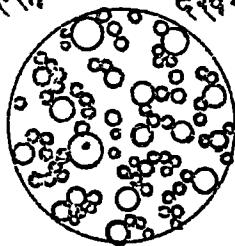
शुकल १
स्वच्छ और आरोग्यता पैदा करनेवाला दूध
ख़ुर्दबीन से ऐसा देख पड़ता है
ख़राब दूध जो रोग उत्पन्न करता है

शकल ७
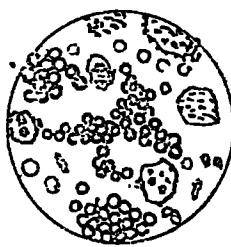
नाना भांति के जन्तु जो बहुधा अनेक प्रकार के खाने और ज़र्द शकर में नज़र आते हैं ख़ुर्दबीन से ऐसे देख पड़ते हैं
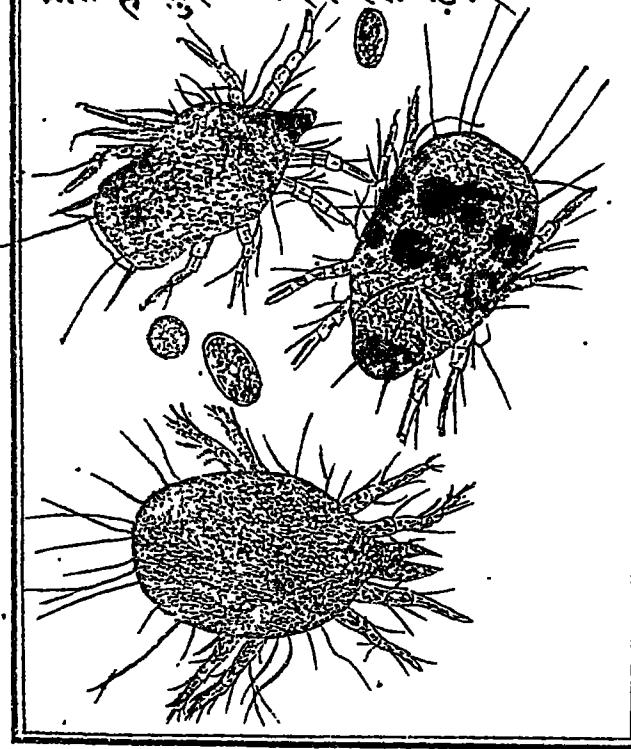
जाते हैं, जिनसे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, आटा रोटी बनाने के लिये स्वच्छ नवीन होना चाहिये, पीली खांड (करकड़) भी चौमासे में बहुधा ग़लीज़ होजाती है, उस में जीव पड़ जाते हैं।

जो कि यह वृत्तान्त इतना है कि यदि पूरा लिखा जाय तो एक ग्रन्थ भर जाय और इस पुस्तक मे इतनी जगह नहीं इस कारण केवल इसी एक शब्द पर समाप्त करता हूं कि सफ़ाई का सदा भले प्रकार विचार रखना उचित है।

इति।

आनन्द रसायन के सार्टीफिकट

यह पुस्तक यदि जवाहिर के मोल भी खरीदी जाय तो भी सस्ती है, परन्तु कीमत केवल १।) सवा रुपया रक्खी गई है पांच या, ज़ियादा पुस्तकें खरीदार को महसूल माफ़, दस पुस्तक या ज़ियादा ख़रीदार को १०)रु० सैकड़ा कमीशन दिया जायगा; २५ पच्चीस पुस्तक या इससे अधिक खरीदार एजन्ट समझे जायँगे, कमीशन के विषयमें पत्रद्वारा दरयाफ्त करसक्ते हैं। इस पुस्तक के लाभदायक होने के बहुत से पत्र हमारे पास हैं, जिनमें से चन्दपत्रों का खुलासा नीचे दर्ज है:—

जनाब डाक्टर हाफिज़ुल्लाखां साहब इन्चार्ज शफ़ाख़ाना शहर अजमेर फरमाते हैं- विशेष कहना तो वृथा है-यह अजब

पुस्तक लिखी है,जोकि हरख़ास व आम के लिये लाभदायक हैं—विशेष कर अजान तरुण विद्वान् लोगों को। तो गोया जीव की रक्षा है. ऐसी पुस्तक हरएक छोटे बड़े पुरुष के पास होना वहुत ज़रूरहै कि इसको पढ़कर अपने तरीक़े और चाल चलन दुरुस्त रक्खें, और अपने शरीर की और अपने सन्तानों के शरीर की तन्दुरुस्ती पूर्ण तौरसे प्रबन्ध कर सकें, हर नुसख़ा इसका मुजर्रव और आज़मूदाहै , और कभी अपने उस असरसे कि जिसके वास्ते वह प्रकाशित किया गया है विरुद्ध नहीं कर सक्ता, उनके असर और तासीर ऐसे सही हैं कि जैसे सूर्य्य के साथ धूप का होना यकीन बख़्शाता है, मैं अपने विश्वास और परीक्षा से इस

पुस्तक के बारेमें कहताहूं कि – यदि हिन्दुस्तानी डाक्टर और यूनानी हकीम इसके नुसखे काम में लावेंगे तो अति प्रसन्न होवेंगे, और लाभदायक पावेंगे, और ग्रन्थकर्त्ता को सदैव धन्यवाद देंगे, मेरे और ग्रन्थकर्त्ता के शुक्र गुज़ार होंगे।

जनाब हकीम बहाउद्दीनखां साहब खलफ़ जनाब अमीरुद्दीन मोहम्मदखां साहब कावली फ़रमाते हैं कि हक़ीक़त में इस किताब का एक २ हरुफ़ लखोखा मन सोने से भी बेश क़ीमत है।

जनाब हकीम सय्यद नजफ अली साहब शहर मुरादाबाद से लिखते हैं कि सुभानअल्ला क्या किताब है कि जिसके पढ़ने से अक़ल और ज़हन रोशन हो बीमारों को शफ़ा हो मालिक को

नेक नामी अज़हद हासिल हो और किताब बनाने वाले का बड़ा भारी सवाब हो मालिक ऐसे फ़ैज़ के पहुंचाने वाले ग्रन्थ कर्ता की क़यामत तक सलामत रक्खें और उसके इक़बाल और ज़ोर में तरक्की फ़रमावें ।

जनाब हकीम इब्न हसन साहब शहर अमरोहा से लिखते हैं कि आपकी किताब जथा नाम तथा गुणहै हकीम और डाक्टरों के वास्ते ख़ासकरके मदद-गार है तनदुरुस्ती क़ायम रखने के लिये मानो हर शख़्स को अमृत रूपी है बल्कि मेरी रायमें राजा और महाराजों को इस किताब को अपने मुल्क में आम तौर पर तक़सीम करनी चाहिये ता कि उनकी प्रजा उन बुराइयों और

सब बलाओं से जिसमें के नौजवान फसते हैं बचें।

जनाब डाक्टर रूपकिशोर साहब टन्डन सरजन व मेडिकल आफिसरस रियासत भरतपुर फरमाते हैं।

आप की किताब पहुंची उसकी शुक्रिया अदा करता हूं जिन शख्सों के वास्ते ये किताब लिखी गई है निहायत उम्दा है और ये किताब अमूल्य है और मैं उमैद करता हूं कि आप लोग इस किताब को बहुत फ़ायदेसे पढ़ेंगे।

डाक्टर शेख़ अब्दुल्ला साहब हाल में निवासी अजमेरशरीफ़ फ़र्माते हैं-विशेष क्या वर्णन करूं हरएक पृष्ठ एक २ अशर्फी के मोल भी कहा जाय तो सस्ता है।

महता फतहचन्द साहब बी. ए. बैरिस्टर-एट-ला, निवासी अजमेर फर्माते हैं कि तरुण मनुष्य को जो कुछ गृहस्थाश्रम के कर्त्तव्य पूरे करने योग्य हैं, वह पूर्ण तौर से इस पुस्तक में मौजूद हैं, इस पुस्तक में निहायत उम्दगी से हस्तमैथुन और व्यभिचार के बुरेफल, लाभदायक शिक्षायें, लाभदायक मैथुन के क़ायदे, और नुसखे, दर्ज हैं।

मुन्शी मिट्ठनलाल साहब भार्गो बी. ए. एल. एल. बी. वकील हाई कोर्ट पश्चिमोत्तर देश फ़र्माते हैं-आजकलके ज़माने में ऐसी पुस्तक की बड़ी भारी आवश्यकता है, शिक्षा के विषय में जो पूरी २ चितावनी तरुण पुरुषों के वास्ते बयान की गई है, वह उनको ज़रूर होनी चाहिये, यदि

वह इस पुस्तक को पढ़ेंगे ज़रूर उन एबों और ख़राबियों से जिनमें कि वे इस ज़माने में फसते हैं बचेंगे । इस पुस्तक में अनमोल क़ायदे मैथुन के वास्ते वर्णन किये गये हैं, यह पुस्तक केवल हम लोगों ही को लाभदायक नहींहै परन्तु आइन्दा की नसल को ताक़तवर और ख़ूबसूरत अक्लमन्द बनाने की बुनियाद डालतीहै।

पंडित शालग्रामजी साहब शास्त्री प्रोफेसर संस्कृत गवर्नमेन्ट कालेज अजमेर फर्माते हैं। यह पुस्तक यथा नाम तथा गुण वालीहै, इसकी प्रशंसा जितनी कीजाय थोड़ीहै, इस समय ऐसे पुस्तक का होना अति लाभ कारी है आजकल के नव शिक्षितों के लिये तो मानो काम धेनुही है, प्रत्येक गृहस्थ को इसकी

एक २ प्रति पासरखनी अत्यावश्यक है सारांश यह है कि इसकी प्रशंसा लेख-नी की शक्ति से बाहर है। जो महाशय कि मुझसे अपना इलाज कराना चाहें वे पत्र द्वारा करा सक्ते हैं उनके पत्र आने पर उनकी बीमारी के वास्ते यातो नुसखा या दवा वेल्यू पेबिल भेजीजायगी

बाबू दीपचन्द जी साहब मैनेजर मुलतानमल प्रिंटिंग प्रेस नीमच से लिख-ते हैं—

इस देश दशाको देखकर उदार चित्त डाक्टर द्वारकनाथ जीने देशोपकार के लिये आनन्द रसायन नाम की पुस्तक बनाई जिसमें हर प्रकार के रोगोंका लक्षण और रोगोंसे बचनेका उपाय तथा इस में सन्तानोत्पति का पूरा वि:

धान भली भांति से दिखाया गया है हर किस्म की बीमारी की औषधि से परि पूर्ण लिखी गई है जिसको मुलतानमल प्रेस नामक यन्त्रालय में मुद्रित कराई है यहां पर ये कहावत है कि सोनामें सुगन्धि अर्थात् एक तो डाक्टर साहब के ग्रन्थ की जहां तक तारीफ़ कीजाय थोडी है फिर प्रेस में निहायत उमदा टाइप व सब किस्म का सामान होनेसे सफ़ाई के साथ छापी गई है।

इस से ये पुस्तक अति उत्तम १४० पेज बम्बई टाइपमें सफेद काग़ज़ पर छप-कर तय्यार हुई है कीमत भी हमारे समझ में कुछ ज्यादा नहीं है कुल १) है मैं आशा करता हूं मेरे सब देश भाई एक एक प्रति अवश्य खरीद कर अपने

सन्तान वो कुटुम्ब को फायदा पहुंचावेगें

चित्र नम्बर २ का वर्णन ।

---

१ गुजराती रोग पैदा करनेवाले जानदार

२ जानदार जो ग़लीज़ पानी और सड़े हुए आलुओं में पाये जातेहैं-

३ जानदार जो मोतीजरा - बुखार आदि पैदा करते हैं-

४ जानदार जो फसली बुखार पैदा करते हैं-

५ जानदार जो तपेदिक (विषमज्वर) पैदा करते हैं-

६ कोढ़ पैदा करने वाले जानदार

७ हैज़ा पैदा करने वाले जन्तुओं की सूरत-

८ जानदार जोकि सड़ी हुई बनस्पाति में पाये जाते हैं-

९ हैज़ा पैदा करने वाले जानदारों की सूरत-

१० जानदार जिनसे सिरका पैदा होता है-

११ जानदार जो कि पानी और नबा-ताती सड़े हुए फुज़ले में पाये जाते हैं-

१२ नाना प्रकारके जानदारजो गलीज़ पानी में पाये जाते हैं-

१३ जानदार जो खराब पानी में पाये जाते है-

☞पता—डाक्टर द्वारकानाथ लाखन कोठरी—अजमेर।
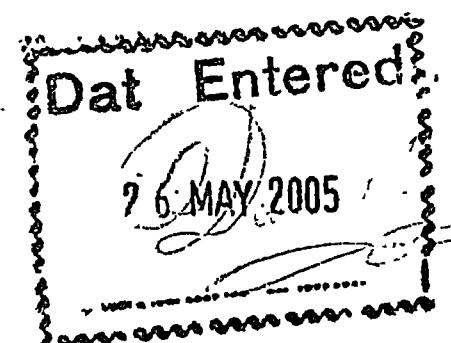
Das Gupta & Co. Pvt. Ltd., 54-3, College Street, Calcutta-12

New Script, Booksellers, 172-3, Rashbehary Avenue, Calcutta-

The Eastern Book Agency, 4, Wood Street, Calcutta-16.

The Modern Book Depot, 78, Chowringhee Centre, (Opp. New Empire Cinema), Calcutta-13.

W. Newman & Co., 3, Old Court House Street, Calcutta.

chin: Pai & Company, Booksellers, Broadway, Ernakulam, Cochin-11.

oimbatore: Pai & Sons, 113, Big Bazar, Coimbatore-1.

ehra Dun: Bishen Singh Mahendra Pal Singh, 23-A, New Connaught Place, Dehra Dun.

English Book Depot, 15, Rajpur Road, Dehra Dun.

Natraj Publishers, 17, Rajpur Road, Dehra Dun.

lhi: Atma Ram & Sons, Booksellers, Kashmere Gate, Delhi-6.

Eastern Book Co., Kashmere Gate, Delhi-6.

Federal Law Depot, Kashmere Gate, Delhi-6.

Krishna Law House, 35-36 Gokhale Market, Tis Hazari, Delhi-6.

[illegible] Book Co. (P) Ltd., Netaji Subhas [illegible]